International Journal of Education and Science Research Review
P-ISSN 2349-1817, E- ISSN 2348-6457
www.ijesrr.org August- 2017, Volume-4, Issue-4 Email- editor@ijesrr.org

भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान नारी की भूमिका का संक्षिप्त मूल्यांकन

Savita
Government Girls Higher Secondry School
Fatehabad, Haryana

सार–
इस संसार में कोई भी वस्तु स्थिर नहीं है और इन्हीं में से एक है नारी की स्थिति। नारी की स्थिति में भी समय के साथ–साथ परिवर्तन हुआ है। नारी सृष्टि की अनुपम कृति है। प्राचीनकाल से वर्तमान समय तक सभी देशों के साहित्य में नारी की ममता, संवेदनशीलता, प्रेम, वात्सल्य, दया, करूणा, भक्ति, श्रद्धा, कर्तव्यपरायणता एवं धर्मनिष्ठा को सराहा जाता रहा है। यही नहीं वरन् नारी को परिवार के लिए त्याग, तप और प्रेम की त्रिवेणी कहकर न केवल सम्मानित किया गया है वरन् यह भी कहा गया है कि जिसे इस त्रिवेणी के पवित्र प्रेम जल में स्नान करने का अवसर नहीं मिला हो, उससे अधिक भाग्यहीन और कोई नहीं हो सकता। यही कारण है कि किसी भी देश में नारी की स्थिति और स्तर उस देश की सभ्यता एवं संस्कृति का दर्पण होता है। भारत के उत्थान और पतन के इसी क्रम के विभिन्न आयामों में भारतीय नारी की परिवर्तित स्थिति परिलक्षित होती है। जिस प्रकार बदलते हुए समय के साथ आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक स्तर में परिवर्तन हुआ है उसी प्रकार नारी की स्थिति भी उत्थान और पतन के झूले में झूलती रही है। कभी तो नारी को देवी कहकर सम्मानित किया गया है तो कभी पुरुष की आश्रित एवं मात्र भोग्या कहकर उस पर अनेक स्वभाव जन्म दोषों का आरोपण कर उसे अनादृत किया गया है।

प्रस्तावना–
1915 में गांधी जी के भारतीय राजनीति में आगमन से ही भारत में संघर्ष की एक नयी विचारधारा का जन्म हुआ था और वह थी सत्य और अहिंसा के बल पर विजय प्राप्त करना। परन्तु गांधी जी द्वारा समय–समय पर अंग्रेजी सरकार का विरोध करने के लिए जो आन्दोलन किये गये, उन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन में योगदान तो दिया, फिर वे भारत को स्वतंत्र कराने तथा अंग्रेजी सरकार पर दबाव डालने में असफल ही रहे। जिससे भारतीय जनता एवं नेताओं में गांधीवादी नीतियों के प्रति जो अगाध श्रद्धा थी वह समाप्त हो गयी, जिसमें से एक नेताजी सुभाषचन्द्र बोस थे। यद्यपि प्रारम्भ में सुभाष चन्द्र बोस गांधीवादी नीति से सन्तुष्ट थे। परन्तु बाद में उनकी असफलता से उत्साहित होकर उन्होंने क्रान्तिकारी नीतियों का मार्ग अपनाया, जिसके वे प्रारम्भ से ही समर्थक थे। अपनी इन्हीं गतिविधियों के कारण सुभाषचन्द्र बोस को अनेक बार गिरफ्तार किया गया और वे निरन्तर देश के नौजवानों के प्रेरणा स्रोत बनकर लोकप्रिय होते गए। इनकी लोकप्रियता के कारण ही इन्हें 1938 के हरिपुर अधिवेशन में कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया, परन्तु क्रान्तिकारी विचारधारा के कारण सुभाष चन्द्र बोस का महात्मा गांधी स मतभेद हो गया और अन्ततः 1939 में उन्होंने कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया।

कांग्रेस से त्यागपत्र देने के पश्चात सुभाषचन्द्र बोस ने एक नये संगठन जिसका नाम फारवर्ड ब्लाक था, की स्थापना की। फारवर्ड ब्लाक के माध्यम से उन्होंने उग्रवादी गतिविधियां प्रारम्भ कर दी परन्तु अग्रेजी सरकार ने तुरन्त ही सुभाष चन्द्र बोस को गिरफ्तार कर लिया। सुभाष चन्द्र बोस वहां से निकलने में सफल हो गये और जापान पहुंचे। जापान में कैप्टन मोहन सिंह द्वारा स्थापित आजाद हिन्द फौज का नेतृत्व नेता जी ने संभाला, जिसमें प्रसिद्ध क्रान्तिकारी रासबिहारी बोस का भी सहयोग था। महात्मा गांधी एवं जवाहरलाल नेहरू की भांति नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने भी गांधीवादी आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी की प्रशंसा की थी। यही कारण था कि नेता जी ने आजाद हिन्द फौज में महिलाओं को सम्मिलित करने का निश्चय कर लिया। आजाद हिन्द फौज में महिलाओं की भागीदारी हेतु 1943 में महिला विभाग की स्थापना की गई, जिसमें एम.के. चिन्दाबरम को अध्यक्ष एवं सचिव पद हेतु कु0 सरस्वती को चुना गया। यद्यपि प्रारम्भ में महिलाओं का कार्य केवल धन एकत्रित करना, सैनिकों का इलाज एवं सुविधाएं उपलब्ध कराना था, परन्तु बाद में महिलाओं द्वारा नेताजी से युद्ध में भेजने का निवेदन करने पर नेताजी ने नेहरू बिग्रेड, सुभाष बिग्रेड और गांधी बिग्रेड की भांति रानी झाँसी रेजीमेन्ट की भी स्थापना की। नेताजी ने कहा कि मैं चाहता हूँ कि मृत्यु से भी न डरने वाली बहादुर महिलाओं की भी एक सैन्य टुकड़ी हो जो सन् 1857 की महारानी लक्ष्मीबाई की भांति अंग्रेजों के विरूद्ध भारत की आजादी के लिए युद्धभूमि में कूद पड़ने के लिए तैयार रहें। इसलिए स्वाधीनता प्राप्ति के अन्तिम संघर्ष के समय हमें एक झाँसी की रानी नहीं, बल्कि हजारों झाँसी की रानी चाहिए।

अब महिलाएं भी पुरूषों की भांति नेताजी के नेतृत्व में युद्ध में संलग्न हो गयी, जिसमें कैप्टन लक्ष्मी सहगल (स्वामी नाथन) का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस युद्ध में महिलाओं ने इस बात पर लेशमात्र भी दृष्टि नहीं डाली कि वे महिलाएं हैं वरन् वे तन, मन और धन सभी प्रकार से अपने प्राण न्यौछाँवर कर देश की सुरक्षा हेतु तत्पर थी। कई महिलाओं ने युद्ध में लड़ते हुए अपने प्राण त्याग दिये, जो वास्तव में वीरता, साहस और अद्भुत शौर्य का परिचायक है। यद्यपि आजाद हिन्द फौज भी पहले की भांति अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सका परन्तु इसके माध्यम से नारी ने जिस वीरता एवं साहस का परिचय दिया वह नारी शक्ति को दर्शाता है।

ऐसा नहीं है कि महिलाएं पहली बार ही नेताजी के माध्यम से क्रान्तिकारी गतिविधियों में सम्मिलित हुई थी बल्कि इससे पूर्व भी समय–समय पर महिलाओं ने क्रान्तिकारी गतिविधियों में सहयोग दिया था। जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से क्रान्तिकारियों के उद्देश्य को प्राप्त करने में उनका साथ दिया, जिनमें से कुछ प्रमुख क्रान्तिकारी थी–

1. सरला देवी चौधरानीः–

सरला देवी चौधरानी पहले से ही राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत थी। ये क्रान्तिकारी गतिविधियों से प्रेरित थी, यही कारण था कि उन्होंने क्रान्तिकारी संगठन युगान्तर के माध्यम से क्रान्तिकारी गतिविधियों में सहयोग करना प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने विभिन्न प्रकार के तरीके अपनाकर भारतीय युवाओं को क्रान्तिकारी गतिविधियों हेतु प्रोत्साहित एवं संगठित किया था। यही नही वरन् मीराष्ठमी जैसे उत्सवों के शुभारम्भ के साथ–साथ युवकों के शारीरिक एवं नैतिक विकास के नाम पर उन्होंने क्लबो एवं व्यायामशालाओं की स्थापना भी की थी, जिसका प्रमुख उद्देश्य युवकों में क्रान्तिकारी आदर्शवादी चेतना एवं सक्रियता उत्पन्न करना था। सरला देवी चौधरानी द्वारा ही भारतीय स्त्री महामण्डल का गठन किया गया था, जिसका उद्देश्य नारी चेतना का विकास करना एवं सामाजिक स्तर को ऊंचा उठाना था।

2. ऐशूबाई सावरकरः–

1915 में ऐशूबाई सावरकर जो कि गणेश सावरकर की पत्नी थी, ने क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने अभिनव भारत की महिला समिति का गठन किया, जिसमें अनेक महिलाओं ने उनका सहयोग दिया। ऐशूबाई सावरकर ने अनेक महिला क्रान्तिकारियों के साथ मिलकर जैसे– लक्ष्मीबाई खरे, जानकी बाई गोरे, लक्ष्मीबाई भट्ट तथा देवरानो यमुनाबाई नारी जागरण एवं क्रान्तिकारी प्रशिक्षण का कार्यक्रम संचालित किया। सर्तकता, सक्रिय कार्य एवं संगठन शक्ति उनका विशेष गुण था परन्तु, बाद में अंग्रेजी सरकार के भय से उन्होंने अभिनव भारत का नाम बदलकर आत्मनिष्ठ युवती समाज रख दिया।

3. प्रीतिलता वाडेदारः–

1930 में घटित महत्वपूर्ण घटना जिसमें सूर्यसेन नामक प्रसिद्ध क्रान्तिकारी द्वारा चटगाँव के सरकारी शास्त्रागार पर हमला बोला गया था तथा भारी संख्या में हथियार लूट लिये गये थे, में भी महिला क्रान्तिकारियों ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया था। प्रीतिलता वाडेकार जिनका जन्म चटगाँव के श्री जगत बन्धु वाडेकर के सामान्य परिवार में हुआ था, उन्होंने भी चटगाँव आर्मरी रेड केस में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था। यद्यपि पुलिस द्वारा उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था परन्तु अंग्रेजों के सामने नतमस्तक होने के स्थान पर उन्होंने पोटेशियम साइनाइट जो वो अपने साथ ले गई थी को खोकर शहीद के रूप में वीरगति को प्राप्त किया। इन्हीं से प्रेरित होकर अन्य क्रान्तिकारी महिला कल्पना दत्त ने भी चटगाँव के आर्मरी केस का पूरक प्रयास किया परन्तु उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

4. लीला नागः–

लीला नाग ने प्रत्यक्ष रूप से तो नही परन्तु अप्रत्यक्ष रूप से क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग लिया था। उन्होंने दिसम्बर 1923 में ढाका में दीपाली संघ की स्थापना करके महिलाओं को क्रान्तिकारी गतिविधियों हेतु प्रशिक्षित करना प्रारम्भ कर दिया। अनुशीलन समिति के क्रान्तिकारी पुलिन दास जुडो, लाठी एवं कटार चलाने का प्रशिक्षण दीपाली संघ की संस्थाओं को देते थे। इसी संघ ने दो हाईस्कूल, नारी शिक्षा मन्दिर एवं शिक्षा भवन भी स्थापित किये। इस दीपाली संघ में सम्मिलित महिलाओं द्वारा हस्तकला का भी कार्य किया जाता था। जब इन हस्तकला की वस्तुओं की प्रदर्शनी ढाका में लगायी गयी तो इससे अनिल राय एवं उनकी समाज सेवा समिति का सम्पर्क दीपाली संघ से हो गया और दोनों ने मिलकर क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग लिया। यही नही वरन् दीपाली संघ ने जयश्री पत्रिका में कहा है कि बिना किसी स्वार्थ के उन्होंने बलिदान दिया। देश के लिए अपना सर्वस्व त्याग दिया। यह संस्था और पत्रिका उनके आदर्श का प्रतीक है।

5. उज्जवला मजूमदारः–

जब सर जॉन एडरसन को इंग्लैण्ड से बंगाल में कठोर दमन एवं नियंत्रण करने हेतु आमंत्रित किया गया था, तब तो उनके विरूद्ध की गयी क्रान्तिकारी गतिविधियों में उज्जवला मजूमदार ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। सर जॉन एडरसन जो कि ब्लैक एण्ड टैन जत्थे के जनक थे वे आयरिश क्रान्ति संग्राम का दमन करना चाहते थे। यही कारण था कि क्रान्तिकारियों ने उनकी हत्या करने की योजना बनायी, परन्तु इस कार्य के लिए उनके पास हथियारों का अभाव था। उज्जवला मजूमदार न बडी चतुराई के साथ हारमोनियम के अन्दर हथियारों को छिपाकर क्रान्तिकारियों का काम आसान कर दिया और जिन हथियारों को छिपाकर वे दार्जलिंग लायी थी उन्हीं से दार्जलिंग के रेसकोर्स में बंगाल के राज्यपाल एडंरसन पर गोली चलायी गयी थी। इस प्रकार उज्जवला मजूमदार इस एक्शन ग्रुप की क्रान्तिकारी सदस्या बन गयी।

6. मैडम कामाः–

मैडम भीमाजी कामा द्वारा क्रान्तिकारी गतिविधियों को दिये गये संरक्षण ने क्रान्तिकारियों में एक नये उत्साह का संचार किया था। वे प्रारम्भ से ही क्रान्तिकारियों से प्रेरित एवं अंग्रेजो के अत्याचार एवं शोषण से परिचित थी। यही कारण था कि उन्होंने क्रान्तिकारियों का विभिन्न प्रकार से सहयोग किया। उन्होंने भारतीय महिलाओं को राजनैतिक कार्यों के लिए विदेश जाने हेतु एक हजार रूपये की छात्रवृत्ति देने की घोषणा करके क्रान्तिकारी गतिविधियों के लिए प्रोत्साहित किया था। मैडम कामा ने यूरोप से एक क्रान्तिकारी साहित्य भारत तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान ही नही दिया था वरन् जर्मनी में आयोजित स्ट्टगार्ड अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भारत का झण्डा फहराकर अपनी देशभक्ति का परिचय दिया था। यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से मैडम कामा ने कोई भी क्रान्तिकारी कार्य में हिस्सा नहीं लिया, परन्तु उन्होंने समय–समय पर क्रान्तिकारियों का सहयोग कर महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

7. सिस्टर निवेदिताः–

अनुशीलन समिति के माध्यम से क्रान्तिकारी गतिविधियों में सम्मिलित होने वाले क्रान्तिकारियों में सिस्टर निवेदिता का नाम विशेष रूप से उल्लखनीय है। सिस्टर निवेदिता स्वामी विवेकानन्द की शिष्या थी और उन्हीं के पग चिन्हों पर चलकर उन्होंने भारत को स्वाधीन कराने हेतु अथक प्रयास किया। उन्होंने संगठनकर्ता के रूप में विभिन्न गुप्त संगठनों का आयोजन करके क्रान्तिकारियों के कार्यों में भरपूर योगदान दिया। यद्यपि अनुशीलन समिति में अनेक महिलाएं कार्यरत रही जैसे नलिनी घोष, कुमुदनी मित्तर, पारूल मुखर्जी, ऊषा मुखर्जी, सरोज दास एवं चारू चक्रवर्ती आदि जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से क्रान्ति कार्य में अपना सहयोग दिया तथापि सिस्टर निवेदिता की वीरता एवं संगठनकर्ता की भूमिका महत्वपूर्ण थी। जिसने क्रान्तिकारी गतिविधियों को सशक्त रूप प्रदान किया।

इसके अतिरिक्त युगान्तर दल के द्वारा भी अनेक महिलाएं क्रान्तिकारी गतिविधियों में कार्यरत रही जिन्होंने क्रान्तिकारी आन्दोलन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। जिनमें सुनिति चौधरी, शान्ति दास, बीना दास, कमलादास, कल्याणी दास, कमला चटर्जी आदि का नाम उल्लेखनीय है इन महिलाओं ने केवल क्रान्तिकारियों की हर सम्भव सहायता ही नही कि बल्कि क्रान्तिकारियों के साथ अंग्रेजो के विरूद्ध हथियार चलाने में भी अग्रणी रही। इन्हें विभिन्न दलों के साथ–साथ युगान्तर दल में भी घूसा, लाठी चार्ज एवं पिस्तौल चलाने का प्रशिक्षण दिया जाता था। 1928 में गठित हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन पार्टी में भी महिलायें कार्यरत रही थी, जिन्होंने क्रान्तिकारी संगठन के अन्तर्गत प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से क्रान्तिकारी गतिविधियों को जारी रखा। इनमें सुशीला दीदी, दुर्गा देवी वोहरा, रूपवती जैन, शास्त्री देवी, मृणालिनी देवी, सावित्री देवी, लीलवती इत्यादि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। दुर्गा देवी वोहरा ने तो न केवल लेमिग्टन रोड गोली काण्ड में हिस्सा लिया था वरन् हथियारों को क्रान्तिकारियों तक पहुँचाने तथा सैण्डर्स हत्याकाण्ड के बाद क्रान्तिकारी भगतसिंह की पत्नी के रूप में क्रान्तिकारी तक सन्देश पहुंचाने, उन्हें अपने घर में छिपाकर, हथियार एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाकर भी अपना योगदान दिया था।

इन्हीं सब गतिविधियों से प्रभावित होकर ही सुभाष चन्द्र बोस ने महिलाओ को क्रान्तिकारी गतिविधियों हेतु आजाद हिन्द फौज में स्थान दिया था। वास्तव में नारी ने हिंसा एवं अहिंसा दोनों ही रूपों में भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन को सशक्त बनाया था। गाँधी जी के विश्वास को महिलाओं ने अपने त्याग, बलिदान और साहस से पूर्णकर दिखाया था यही नही वरन् जब गांधी जी जेल (1942–44) में थे तब उनका साथ देने वाला कोई ओर नहीं वरन् महिलाएं ही थी जो जेल में उनके साथ रही, प्रथम तो कस्तूरबा गाँधी और द्वितीय डा0 सुशीला नैय्यर। इसके अतिरिक्त महिलाओं ने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप अर्थात् दोनों रूपों में ही आन्दोलन को सशक्त बनाया, जहाँ पर वे प्रत्यक्ष रूप से विद्रोह में हिस्सा नही ले सकती थी, वहाँ पर उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से अपने भाई, पिता एवं पति इत्यादि को संघर्ष में हिस्सा लेने हेतु प्रोत्साहित

करके महत्वपूर्ण योगदान दिया। अन्ततः वह दिन आ ही गया जिसकी प्रतिक्षा में महिलाओं को अपने घर की चाहरदीवारी से बाहर निकलकर संघर्ष में हिस्सा लेना पडा और 15 अगस्त 1947 को देश स्वतन्त्र हो गया।

निष्कर्ष–

अतः इस बात में लेशमात्र भी संदेह नहीं है कि देश को स्वतंत्र कराने का जो बीड़ा पुरू"ाों ने उठाया था एवं जो स्वतंत्र देश का स्वप्न उन्होंने देखा था उसको साकार करने में महिलाओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया था और यही कारण था कि जिस नारी को समाज पहले तुच्छ और उपभोग की वस्तु समझने के साथ–साथ घर की चहारदीवारी तक सीमित रखना चाहता था, वह अब नारी के महत्व को समझने लगा था। वास्तव में महिलाओं ने देश को स्वतन्त्र कराने हेतु जिस उत्साह, शौर्य एवं वीरता का परिचय दिया, उसने समस्त विश्व में एक नयी मिसाल कायम की है। इनका योगदान राष्ट्रीय आन्दोलन में मील का पत्थर साबित हुआ जिसके बिना स्वतंत्रता की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. वृहदारण्य उपनिषद : निर्णय सागर, बम्बई
2. पाणिनी की अष्टाध्ययी : ब्रह्मदत्त जिज्ञासु कृत, चौखम्बा विश्वभारती, वाराणसी
3. मनुस्मृति : निर्णय सागर, बम्बई
4. अथर्ववेद : स्वाध्याय मण्डल, द्वितीय संस्करण, पारडी, सूरत
5. आपस्तम्ब गृह सूत्र : सम्पादक आर. गारले, कलकत्ता, 1882
6. गौतम धर्म सूत्र : डा. उमेश चन्द्र पाण्डेय, चौखम्बा संस्कृत सीरीज
7. देवल स्मृति : स्मृतीनां समुच्चय, आप्टे एच. आनन्दाश्रम, 1905
8. वृहत संहिता : वराह मिहिरकृत, बिठिलओथिका इंडिका, सुधाकर द्विवेदी द्वारा प्रकाशित
9. श्रीमतद्वाल्मीकीय रामायण : गीता प्रेस, गोरखपुर, भाग–1 व 2, संवत् 2017
10. वशिष्ट धर्म सूत्र : सम्पादक फुहरर, बम्बई, संस्कृत सीरीज
11. महाराभारत : समस्त खण्ड, गीता प्रेस, गोरखपुर
12. विष्णु पुराण : गीता प्रेस, गोरखपुर
13. थेरी गाथा : पाली टैक्स्ट सोसायटी
14. महावग्ग जातक : हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाशित, खण्ड 1–4
15. नारद स्मृति : जूनियस जाली, कलकत्ता, 1885
16. कालीदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम : निर्णय सागर प्रेस, बम्बई
17. बृहस्पति स्मृति : स्मृतीनां समुच्चयः, आप्टे, एच. आनन्दाश्रम, 1905
18. कालिदास कृत कुमारसंभव : निर्णय सागर प्रेस, बम्बई
19. बाणभट्ट कृत हर्षचरित्र : निर्णय सागर प्रेस, बम्बई
20. शंकरदिग्विजय : संस्करण, पूना, 1891
21. कथासरित सागर : बम्बई, 1903
22. देवणभट्ट कृत स्मृतिचन्द्रिका : व्यवहारदाण्ड, पृ. 598, गवर्नमेंट ओरिएण्टल लाइब्रेरी, मैसूर
23. कादम्बरी : अष्टम संस्करण, निर्णय सागर प्रेस, बम्बई
24. व्यवहारम्यूरब : नीलकण्ठ प्रणीत, पाण्डुरंग गमन काणे का संस्करण
25. पारखर माहयव (बुद्धचरित्र) : माहवाचार्य कृत पारशरस्मृति की टीका, बम्बई संस्कृत सीरीज